

# 45 -सुर: अल-जासिया

मक्का में नाज़िल हुई और इसकी 37 आयतें हैं !

बिस्मिल्ला-हिर-रहमानिर-रहीम

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. हा मीम
2. ये किताब (कुरान) खुदा की तरफ से नाज़िल हुई है जो ग़ालिब और दाना है
3. बेशक आसमान और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं
4. और तुम्हारी पैदाइश में (भी) और जिन जानवरों को वह (ज़मीन पर) फैलाता रहता है (उनमें भी) यक़ीन करने वालों के वास्ते बहुत सी निशानियाँ हैं
5. और रात दिन के आने जाने में और खुदा ने आसमान से जो (ज़रिया) रिज़क (पानी) नाज़िल फरमाया फिर उससे ज़मीन को उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा किया (उसमें) और हवाओं फेर बदल में अक्लमन्द लोगों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं
6. ये खुदा की आयतें हैं जिनको हम ठीक (ठीक) तुम्हारे सामने पढ़ते हैं तो खुदा और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात होगी
7. जिस पर ये लोग ईमान लाएंगे हर झूठे गुनाहगार पर अफसोस है
8. कि खुदा की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं और वह सुनता भी है फिर गुरूर से (कुफ़र पर) अड़ा रहता है गोया उसने उन आयतों को सुना ही नहीं तो (ऐ रसूल) तुम उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी दे दो
9. और जब हमारी आयतों में से किसी आयत पर वाक्फ़ हो जाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है ऐसे ही लोगों के वास्ते ज़लील करने वाला अज़ाब है

## सुर: अल-जासिया

10. जहन्नूम तो उनके पीछे ही (पीछे) है और जो कुछ वह आमाल करते रहे न तो वही उनके कुछ काम आएँगे और न जिनको उन्होंने खुदा को छोड़कर (अपने) सरपरस्त बनाए थे और उनके लिए बड़ा (सख्त) अज़ाब है
11. ये (कुरान) है और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया उनके लिए सख्त किस्म का दर्दनाक अज़ाब होगा
12. खुदा ही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुकम से उसमें कश्तियां चलें और ताकि उसके फज़ल (व करम) से (मआश की) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो
13. और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सबको अपने (हुकम) से तुम्हारे काम में लगा दिया है जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए इसमें (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं
14. (ऐ रसूल) मोमिनों से कह दो कि जो लोग खुदा के दिनों की (जो जज़ा के लिए मुकर्रर हैं) तवक्को नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें ताकि वह लोगों के आमाल का बदला दे
15. जो शख़श नेक काम करता है तो ख़ास अपने लिए और बुरा काम करेगा तो उस का वबाल उसी पर होगा फिर (आख़िर) तुम अपने परवरदिगार की तरफ लौटाए जाओगे
16. और हमने बनी इसराईल को किताब (तौरैत) और हुकूमत और नबूवत अता की और उन्हें उम्दा उम्दा चीज़ें खाने को दीं और उनको सारे जहाँ पर फ़ज़ीलत दी
17. और उनको दीन की खुली हुई दलीलें इनायत की तो उन लोगों ने इल्म आ चुकने के बाद बस आपस की ज़िद में एक दूसरे से एख़तेलाफ़ किया कि ये लोग जिन बातों से एख़तेलाफ़ कर रहे हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उनमें फैसला कर देगा
18. फिर (ऐ रसूल) हमने तुमको दीन के खुले रास्ते पर क़ायम किया है तो इसी (रास्ते) पर चले जाओ और नादानों की ख्वाहिशो की पैरवी न करो

## सुरः अल-जासिया

19. ये लोग ख़ुदा के सामने तुम्हारे कुछ भी काम न आएँगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के मददगार हैं और ख़ुदा तो परहेज़गारों का मददगार है
20. ये (कुरान) लोगों (की) हिदायत के लिए दलीलो का मजमूआ है और बातें करने वाले लोगों के लिए (अज़सरतापा) हिदायत व रहमत है
21. जो लोग बुरा काम किया करते हैं क्या वह ये समझते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम भी करते रहे और उन सब का जीना मरना एक सा होगा ये लोग (क्या) बुरे हुक्म लगाते हैं
22. और ख़ुदा ने सारे आसमान व ज़मीन को हिकमत व मसलेहत से पैदा किया और ताकि हर शख़श को उसके किये का बदला दिया जाए और उन पर (किसी तरह का) जुल्म नहीं किया जाएगा
23. भला तुमने उस शख़श को भी देखा है जिसने अपनी नफसियानी ख़वाहिशों को माबूद बना रखा है और (उसकी हालत) समझ बूझ कर ख़ुदा ने उसे गुमराही में छोड़ दिया है और उसके कान और दिल पर अलामत मुकर्रर कर दी है (कि ये ईमान न लाएगा) और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है फिर ख़ुदा के बाद उसकी हिदायत कौन कर सकता है तो क्या तुम लोग (इतना भी) ग़ौर नहीं करते
24. और वह लोग कहते हैं कि हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है (यहीं) मरते हैं और (यहीं) जीते हैं और हमको बस ज़माना ही (जिलाता) मारता है और उनको इसकी कुछ ख़बर तो है नहीं ये लोग तो बस अटकल की बातें करते हैं
25. और जब उनके सामने हमारी खुली खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनकी कट हुज्जती बस यही होती है कि वह कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को (जिला कर) ले तो आओ
26. (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ख़ुदा ही तुमको ज़िन्दा (पैदा) करता है और वही तुमको मारता है फिर वही तुमको क़यामत के दिन जिस (के होने) में किसी तरह का शक़ नहीं जमा करेगा मगर अक्सर लोग नहीं जानते

## सुर: अल-जासिया

27. और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत खास खुदा की है और जिस रोज़ क़यामत बरपा होगी उस रोज़ अहले बातिल बड़े घाटे में रहेंगे
28. और (ऐ रसूल) तुम हर उम्मत को देखोगे कि (फैसले की मुन्तज़िर अदब से) घूटनों के बल बैठी होगी और हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ बुलाइ जाएगी जो कुछ तुम लोग करते थे आज तुमको उसका बदला दिया जाएगा
29. ये हमारी किताब (जिसमें आमाल लिखे हैं) तुम्हारे मुकाबले में ठीक ठीक बोल रही है जो कुछ भी तुम करते थे हम लिखवाते जाते थे
30. गरज़ जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किये तो उनको उनका परवरदिगार अपनी रहमत (से बेहिश्त) में दाखिल करेगा यही तो सरीही कामयाबी है
31. और जिन्होंने कुफ़्र एख्तेयार किया (उनसे कहा जाएगा) तो क्या तुम्हारे सामने हमारी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं (ज़रूर) तो तुमने तकब्बुर किया और तुम लोग तो गुनेहगार हो गए
32. और जब (तुम से) कहा जाता था कि खुदा का वायदा सच्चा है और क़यामत (के आने) में कुछ शुबहा नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या चीज़ है हम तो बस (उसे) एक खयाली बात समझते हैं और हम तो (उसका) यकीन नहीं रखते
33. और उनके करतूतों की बुराईयाँ उस पर ज़ाहिर हो जाएँगी और जिस (अज़ाब) की ये हँसी उड़ाया करते थे उन्हें (हर तरफ से) घेर लेगा
34. और (उनसे) कहा जाएगा कि जिस तरह तुमने उस दिन के आने को भुला दिया था उसी तरह आज हम तुमको अपनी रहमत से अमदन भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं
35. ये इस सबब से कि तुम लोगों ने खुदा की आयतों को हँसी ठहा बना रखा था और दुनयावी ज़िन्दगी ने तुमको धोखे में डाल दिया था गरज़ ये लोग न तो आज दुनिया से निकाले जाएँगे और न उनको इसका मौका दिया जाएगा कि (तौबा करके खुदा को) राज़ी कर ले
36. पस सब तारीफ़ खुदा ही के लिए सज़ावार है जो सारे आसमान का मालिक और ज़मीन का मालिक (गरज़) सारे जहाँन का मालिक है

37. और सारे आसमान व ज़मीन में उसके लिए बड़ाई है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है